

अपवित्र मंदिर से निकलते हुए परमेश्वर की महिमा का दर्शन , आशा, यहेजकेल 8:1-11:25

© 2024 लेस्ली एलन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. लेस्ली एलन द्वारा यहेजकेल की पुस्तक पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 5 है, अपवित्र मंदिर से निकलते हुए परमेश्वर की महिमा का दर्शन, अंततः आशा। यहेजकेल 8:1-11:25.

अब तक हमने यहेजकेल की पुस्तक के पहले भाग, अध्याय एक से सात को कवर किया है। अब हम दूसरे भाग की शुरुआत कर रहे हैं, जो अध्याय आठ से शुरू होकर अध्याय 19 तक जाता है। अध्याय आठ से 11, जिनसे हम इस बार संबंधित हैं, वे परमेश्वर की महिमा के दर्शन पर हावी हैं, जो अपवित्र मंदिर को छोड़ रहा है।

हम अध्याय 12 में प्रतीकात्मक कार्यों के विवरण पर आगे बढ़ेंगे, और फिर अध्याय 13 से 19 में न्याय के भविष्यवाणियों पर आगे बढ़ेंगे। जैसा कि आपको याद होगा, यह घटकों का वही पैटर्न था जो हमारे पास पहले भाग में था। इसलिए, पुस्तक को जिस तरह से तैयार किया गया है, उसमें अब तक काफी तर्क है।

जैसे-जैसे हम आगे बढ़ेंगे, संरचना के बारे में और भी बहुत कुछ कहना होगा, लेकिन ये मूल बातें हैं। अध्याय एक की तरह, यह एक तारीख से शुरू होता है। अब, हमारे पास मानक कालानुक्रमिक प्रारूप है जो हमें पुस्तक के बाकी हिस्सों में मिलेगा।

अध्याय एक में इसे संपादकीय रूप से शामिल करना पड़ा, क्योंकि यहेजकेल ने केवल अपने 30वें वर्ष का उल्लेख किया था। लेकिन तब, अध्याय एक में, यह जुलाई 593 था। और अब हम सितंबर 592 पर आ गए हैं।

तो, एक साल से कुछ ज़्यादा समय बाद, दूसरे भाग की शुरुआत की तारीख तय की गई है। और यह, ज़ाहिर है, तारीख तय करके यह एक सावधानीपूर्वक दस्तावेज़ है कि यह एक वास्तविक भविष्यसूचक अनुभव था। यह दिखाता है कि यह वास्तविक है और जो कहा जा रहा है उसे प्रमाणित करता है।

अध्याय 8 से 11 तक एक सुसंगत संपूर्णता है क्योंकि उनमें एक ढांचा है। और ढांचा है पहले तीन श्लोक, अध्याय 8 के श्लोक 1 से 3 का दिव्य अनुभव। यह दर्शन की शुरुआत है। और फिर जब हम अध्याय 11 के अंत में आते हैं, श्लोक 24 से 25 तक, हमें दर्शन के अंत का उल्लेख मिलेगा।

अध्याय दो में जो दृश्य उसे दिखाई देता है, वह अध्याय एक में पढ़े गए दृश्य से बहुत मिलता-जुलता है। यह अलौकिक आकृति, और जाहिर तौर पर ईश्वर। मैंने देखा, और वहाँ एक आकृति थी जो एक इंसान जैसी दिख रही थी।

उसकी कमर के नीचे जो कुछ दिखाई दे रहा था, वह आग थी। और कमर के ऊपर, वह चमकती हुई अम्बर की चमक की तरह दिखाई दे रही थी। और इसलिए वहाँ वही आकृति उसे दिखाई दे रही है।

लेकिन उससे पहले, हमें मानवीय परिस्थिति का जिक्र करना होगा। मैं छठे साल, छठे महीने, महीने के पाँचवें दिन अपने घर में बैठा था, और यहूदा के बुजुर्ग मेरे सामने बैठे थे। और वे जाहिर तौर पर उससे सलाह लेने आए थे।

और उन्हें किसी अधिकार के व्यक्ति के रूप में माना जाता है। और किसी को यह आभास होता है कि ये बुजुर्ग श्रम शिविर के लिए जिम्मेदार थे। और यह एक स्वशासित श्रम शिविर था, और वे इसका प्रभार संभाल रहे थे।

और वे, जाहिर है, यहजेकेल से संदेश सुनने के लिए आए हैं। लेकिन वहाँ प्रभु का हाथ मुझ पर पड़ा। हमें यह मजबूत क्रिया मिलती है: गिर गया।

वाह! ओह, वहाँ एक दर्शन या एक महत्वपूर्ण संदेश आ रहा है। और ऐसा ही हुआ। और इसलिए, हमें दर्शन में दिव्य आकृति से परिचित कराया गया है।

और इसने एक हाथ का आकार बढ़ाया, और मेरे सिर के एक बाल को पकड़कर ऊपर उठाया, और फिर एक आत्मा ने मुझे अपने नियंत्रण में ले लिया, और मुझे धरती और स्वर्ग के बीच ऊपर उठा लिया, और मुझे ईश्वर के दर्शनों में यरूशलेम ले आया। अब, अध्याय 1 में, हमारे पास एक भौतिक उत्थान था। नहीं, यह अध्याय 3 में था, उस पहले दर्शन के अंत में।

हमारे पास यह लेविटेशन था, और शारीरिक रूप से, जेरेमिया को लेबर कैंप में वापस ले जाया गया। मुझे नहीं पता कि यह कितनी दूर था। लेकिन यह अलग लगता है।

वह एक ट्रान्स में चला जाता है, और यह एक दिव्य अनुभव है कि उसे लगता है कि उसे ऊपर उठाया जा रहा है। लेकिन इस दौरान, वह अपनी कुर्सी पर बैठा रहता है। और अध्याय 11 के अंत में, जब वह ट्रान्स से बाहर आता है, तब भी वह वहीं होता है।

तो, यह एक अलग तरह का उत्थान है। उसे लगता है कि यह एक ट्रान्स अनुभव है। श्लोक 4 एक बहुत ही महत्वपूर्ण श्लोक है।

उसे मंदिर के पास एक जगह लाया गया है। और पद 3 में, मैं कहना चाहता हूँ कि वहाँ दिव्य दृश्यों की एक श्रृंखला है। चार दिव्य दृश्य हैं।

और एक से दूसरे तक यह गति है। सबसे पहले, यह 3 से 6 तक है, फिर 7 से 13 तक, फिर 14 और 15 तक, और अंत में, 16 और 17 तक। और इसलिए यह पहला दृश्य है जो उन्होंने मंदिर क्षेत्र में दिखाया है।

यह मुश्किल है। मंदिर के भीतरी प्रांगण में इस आंदोलन का सावधानीपूर्वक चित्रण किया गया है। और यह देखना बहुत आसान नहीं है कि यह आंदोलन कहां से शुरू होता है और कैसे आगे बढ़ता है।

लेकिन सबसे ज़्यादा संभावना यह है कि हम शुरू में यहजेकेल को शहर की दीवार के अंदर, शहर की दीवार के उत्तरी द्वार के अंदर एक अदालत में लाते हुए देखेंगे। और फिर वह महल परिसर की दीवार में दूसरे द्वार से आगे बढ़ता है। और एक और दर्शन है।

वह मंदिर के बाहरी प्रांगण के द्वार से आगे बढ़ता है। अंत में, वह मंदिर के भीतर प्रवेश करता है। और इस तरह घटनाओं का एक क्रम शुरू होता है।

और हर मामले में, उसने एक भयानक दृश्य दिखाया है। यह ईजेकील के लिए भयानक होता, और यह निश्चित रूप से भगवान के लिए भयानक है कि वहाँ पूजा चल रही है। लेकिन यह मूर्तिपूजक पूजा है, जो नहीं होनी चाहिए।

यह शहर की दीवार और महल परिसर की दीवार के बीच उस प्रांगण में मंदिर क्षेत्र के बाहर पूजा से शुरू होता है। हमें इन दृश्यों के बारे में एक बुनियादी सवाल पूछना होगा। क्या यह स्काइप अनुभव है? क्या यह एक लाइव अनुभव है कि ईजेकील को, उसकी समाधि में, यरूशलेम ले जाया जाता है? यह ऐसा है जैसे एक टेलीविज़न चालू हो, और वह एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाता है और देखता है कि क्या हो रहा है।

क्या यही हो रहा है? या फिर, उसे एक वीडियो दिखाया जा रहा है जिसमें अलग-अलग दृश्य, अलग-अलग समय पर होने वाली अलग-अलग चीज़ें शामिल हैं। और उन्हें एक वीडियो में एक साथ लाया जाता है और फिर यहजेकेल को यह वीडियो दिखाया जाता है। और बाद वाला सुझाव सही लगता है क्योंकि इनमें से एक दृश्य में महिलाएं बेबीलोन के देवता तम्मुज के लिए शोक अनुष्ठान कर रही हैं।

यह खास तौर पर महिलाओं का धर्म था, तम्मुज की पूजा। हर साल उसकी मृत्यु हो जाती थी और उसे पाताल लोक ले जाया जाता था, और महिलाएं शोक उत्सव मनाती थीं। लेकिन यह एक खास महीने में होता था, जो हमारे लिए जून के मध्य से जुलाई के मध्य तक होता है।

और इसलिए, यह सितंबर में नहीं था। वास्तव में, यह एक और समय था, और यह एक और महीना है। और इसलिए, ये अलग-अलग वीडियो, अलग-अलग वीडियो दृश्य प्रतीत होते हैं, और लाइव प्रसारण नहीं हैं जिन्हें वह एक ही समय में देखता है, जो वास्तव में वास्तविक जीवन में चल रहा है।

तो, इस पहले दर्शन के बारे में बहुत कुछ स्पष्ट करना है। और उसने पद 4 में ईर्ष्या की यह छवि दिखाई है जो ईर्ष्या को भड़काती है। और जाहिर है कि यह एक मूर्तिपूजक छवि है, एक मूर्तिपूजक भगवान की छवि।

और ऐसा नहीं होना चाहिए, ऐसा नहीं होना चाहिए। यह मंदिर परिसर के बाहर है, यह सच है। लेकिन उन्हें इस मूर्तिपूजक मूर्ति की पूजा नहीं करनी चाहिए।

और सही मायने में, यह ईर्ष्या है कि ऐसा नहीं होना चाहिए। इस्राएल के एकमात्र परमेश्वर यहोवा की ही आराधना होनी चाहिए। श्लोक 4 एक महत्वपूर्ण बात बताता है।

इस्राएल के परमेश्वर की महिमा वहाँ थी, जैसा कि मैंने घाटी में देखा था। खैर, वह अध्याय 1 का दर्शन था। और वह चलता-फिरता सिंहासन था, जिस पर देवता बैठे थे और जीवित प्राणी उस मंच को सहारा दे रहे थे जिस पर सिंहासन था।

और यहाँ इस्राएल के परमेश्वर की महिमा है। और इसलिए यह एक महत्वपूर्ण पहला कदम है क्योंकि हम देखेंगे कि मंदिर में परमेश्वर की उपस्थिति मंदिर को छोड़ने जा रही है, और परमेश्वर की उपस्थिति गतिशील सिंहासन की ओर बढ़ने वाली है। धीरे-धीरे, जैसे-जैसे ये अध्याय आगे बढ़ते हैं, हम इस आंदोलन को, कदम दर कदम, विभिन्न चरणों में, बहुत ही नाटकीय तरीके से चित्रित होते देखेंगे।

और फिर, उससे पहले, आपको याद होगा कि जब हम अध्याय 1 पर चर्चा कर रहे थे, तो हमने एक बहुत ही जटिल सिद्धांत के संदर्भ में ईश्वर की उपस्थिति के बारे में बात की थी। ईश्वर अलग-अलग जगहों पर अलग-अलग रूपों में मौजूद हो सकता है। और इसलिए, इस अध्याय में, ईश्वर की दो उपस्थितियाँ हैं।

मंदिर में, परम पवित्र स्थान में, संदूक के ऊपर, करूबों के ऊपर विराजमान, परमेश्वर की उपस्थिति है, जैसा कि हमें अक्सर बताया जाता है। वहाँ असली उपस्थिति है। लेकिन अब हमारे पास एक और उपस्थिति है, जिसे महिमा कहा जाता है, यह चलती हुई उपस्थिति।

और इसलिए, यह दोहरी उपस्थिति है। और यह विश्वास बहुत ज़्यादा है कि ईश्वर अलग-अलग जगहों पर अलग-अलग डिग्री पर मौजूद हो सकता है। और इसलिए, वह इस अध्याय में दो रूपों में मौजूद है।

यह महत्वपूर्ण है क्योंकि वह दोहरी उपस्थिति एक एकल उपस्थिति में बदल जाएगी, और मंदिर में परमेश्वर की उपस्थिति जल्द ही समाप्त हो जाएगी। हम अध्याय 7, श्लोक 7 में दूसरे दृश्य पर आते हैं। खैर, पहले दृश्य के अंत में, श्लोक 6 में, परमेश्वर ईर्ष्या की इस छवि की ओर ध्यान आकर्षित करता है।

हे नश्वर, क्या तुम देख रहे हो कि वे क्या कर रहे हैं? इस्राएल का घराना मुझे मेरे पवित्र स्थान से दूर भगाने के लिए यहाँ बहुत ही घृणित कार्य कर रहा है। यह मुझे मंदिर से बाहर निकालने के लिए पर्याप्त है। और इसलिए यह एक चेतावनी है कि वास्तव में ऐसा होने वाला है।

फिर भी आप इससे भी ज़्यादा घिनौने काम देखेंगे। पिछले अध्यायों, खास तौर पर अध्याय 5 से लिया गया वह कीवर्ड यहाँ लिया गया है। यहाँ, धार्मिक अर्थ में, कुछ ऐसा है जो धार्मिक रूप से बहुत गलत था।

लेकिन फिर हम चारों के अगले दृश्य पर चले जाते हैं। और दीवार में एक छेद है। और अगले प्रवेश द्वार के बगल में एक कमरा है।

यहेजकेल इस छेद से झाँककर कुछ होता हुआ देख सकता था। और परमेश्वर ने उसे दीवार को बड़ा करने और उसमें से चढ़ने और बेहतर तरीके से देखने और यह देखने के लिए कहा कि वास्तव में क्या हो रहा है। और यहाँ यह और भी घिनौना काम है।

और इस कमरे की दीवारें थीं। और उस पर तस्वीरें थीं - सभी प्रकार के रेंगने वाले जीव और घिनौने जानवर जो संभवतः देवताओं का प्रतिनिधित्व करते थे।

और इस्राएल के घराने की सारी मूर्तियाँ और ये भयानक चित्र थे। और उनके सामने इस्राएल के घराने के 70 पुरनिये खड़े थे।

यहेजकेल उनमें से एक को शापान के बेटे नायर के रूप में पहचानता है, जिसे वह यरूशलेम में रहते समय से जानता था। वह उन बुजुर्गों में से एक है जो स्पष्ट रूप से मूर्तिपूजक देवताओं की इन छवियों की पूजा कर रहे हैं।

हर एक के हाथ में धूपदान था और धूप का एक सुगंधित बादल ऊपर उठ रहा था। अब, धूपदान का उपयोग करना और धूप जलाना एक पुजारी का काम था। लेकिन यहाँ आम लोग अपनी मूर्तिपूजक पूजा के हिस्से के रूप में इसमें शामिल थे।

और एक बार फिर, श्लोक 12 में इस विस्मयकारी प्रश्न में परमेश्वर का आश्चर्य प्रकट होता है। हे नश्वर, क्या तुमने देखा है कि इस्राएल के घराने के बुजुर्ग अंधेरे में क्या कर रहे हैं? प्रत्येक अपनी मूर्तियों के घर में। जाहिर है, इस कमरे में कई कक्ष थे।

और हर एक बुजुर्ग अपने कक्ष में दीवार पर लगे चित्रों को देख रहा था और अपनी निजी प्रार्थनाओं में व्यस्त था। लेकिन उसने कहा, अच्छा, अभी और भी बहुत कुछ होना बाकी है और इससे भी बुरा कुछ होने वाला है।

तुम देखोगे कि वे और भी अधिक घृणित कार्य कर रहे हैं, वह पद 13 में कहता है। तो यह पद 14 और 15 में तीसरे दृश्य का परिचय है। और ये स्त्रियाँ मंदिर के बाहरी प्रांगण के उत्तरी द्वार के पास बैठी हैं।

और वे बेबीलोन के देवता तम्मूज की पूजा कर रहे हैं। और जैसा कि मैंने कहा, यह पूजा का एक ऐसा रूप था जिसमें विशेष रूप से महिलाएँ शामिल थीं। और जून और जुलाई में, वे इस देवता की वार्षिक मृत्यु पर शोक मनाती थीं।

और वह पाताल लोक में जा रहा है। लेकिन यहूदा में यहूदी महिलाओं द्वारा इसकी पूजा की जा रही है। और यह एक भयानक बात है।

लेकिन अभी और भी बुरा होना बाकी है। और हम इस श्रृंखला के अंतिम दिव्य दृश्य पर आते हैं, जो पद 16 और 17 में है। और यह मंदिर के भीतरी प्रांगण में ही है।

और मंदिर के बरामदे और होमबलि की वेदी के बीच 25 आदमी खड़े थे। और उनकी पीठ मंदिर की तरफ थी, जो कि बहुत ही अपवित्र था क्योंकि यहीं पर भगवान थे। भगवान की उपस्थिति का एक हिस्सा।

और वे सूर्य की पूजा कर रहे थे। वे सूर्य देवता की पूजा कर रहे थे। और संभवतः भोर हो चुकी थी।

वे पूर्व की ओर मुंह करके उगते सूरज की पूजा कर रहे थे और दंडवत कर रहे थे। यह एक भयानक बात है। यह भगवान का अपमान है क्योंकि वे भगवान से मुंह मोड़ रहे हैं, जो मंदिर में उनके पीछे हैं।

वे पूर्व की ओर मुख करके खड़े हैं। और मंदिर उस आंतरिक मंदिर प्रांगण के पश्चिम की ओर है। और परमेश्वर श्लोक 17 में इस ओर ध्यान आकर्षित करता है।

और वह कह रहा है, क्या तुमने यह देखा है, हे नश्वर? और भगवान की ओर से यह चौंका देने वाला उद्गार है। और यह कहता है, देखो, वे अपनी नाक के सामने शाखा लगा रहे हैं। हम नहीं जानते कि इसका क्या मतलब है।

यह सूर्य देवता के प्रति निष्ठा का अधिकार हो सकता है। लेकिन हम वास्तव में नहीं जानते। इसलिए, मैं क्रोध में कार्य करूंगा।

17 में जो कुछ है वह वास्तव में एक आरोप है। और परमेश्वर की अब तक की बातें उन भयानक चीजों का वर्णन करने में आरोप ही रही हैं जो चल रही हैं। लेकिन अब, यह न्याय की भविष्यवाणी के दूसरे भाग की ओर बढ़ता है।

तो, जो सज़ा आएगी। और आरोप और सज़ा के दो भाग पुराने नियम की भविष्यवाणी में अक्सर उस जुड़े हुए शब्द के साथ जुड़े हुए हैं, इसलिए। इसलिए, एकमात्र परिणाम यह होना चाहिए कि मैं क्रोध में कार्य करूंगा।

मेरी नज़र उन पर दया नहीं करेगी और न ही उन्हें कोई मौका मिलेगा। यह भयानक है।

सबसे बुरा तो होना ही है। हालाँकि वे मेरे सामने ऊँची आवाज़ में चिल्लाते हैं, नहीं, नहीं, कृपया हमें छोड़ दें। मैं उनकी बात नहीं सुनूँगा।

अब, हम अध्याय 9 पर आगे बढ़ते हैं। और अब कुछ अलग हो रहा है। और वास्तव में, यह न्याय की भविष्यवाणी में दंड का कार्यान्वयन है। और परमेश्वर पद 1 में चिल्लाता है। उसने मेरे सुनते हुए ऊँची आवाज़ में पुकारा, कहा, शहर के जल्लादों, अपने-अपने हाथ में अपना विनाशकारी हथियार लेकर आओ।

और यहाँ विडंबना है। हमारे मन में यह विचार आया कि शायद वे भक्त ऊँची आवाज़ में चिल्ला रहे होंगे, कि उन्हें बख्श दिया जाए। लेकिन उनके मुक़ाबले, यह ईश्वर की ऊँची आवाज़ है जो प्रबल होती है।

हा हा , नहीं। उनका आखिरी मौका खत्म हो चुका है और विनाश होने वाला है। और हमारे पास ये हैं, जिन्हें हम विनाशकारी देवदूत कह सकते हैं।

ये छह आदमी अपने हथियार लेकर हत्या के लिए तैयार थे। लेकिन फिर, मुझे यकीन नहीं है कि यह... हाँ, यह छह थे। और फिर एक और था।

वहाँ एक और स्वर्गदूत था, जो सन के कपड़े पहने हुए एक आदमी था और उसके पास एक लिखने की डिब्बी थी। यह एक लेखक था। यह एक स्वर्गदूतीय लेखक था।

और हम सोचते हैं, अच्छा, वह वहाँ क्या कर रहा है? और हम पता लगाएँगे। वे अंदर गए और कांस्य वेदी, होमबलि की वेदी के पास खड़े हो गए। और इसलिए हम वहाँ हैं।

यह अगले दृश्य की तैयारी है। और अंततः वे अपना अलग-अलग काम करने जा रहे हैं। छह स्वर्गदूत अपना विनाश कर रहे हैं और फिर दूसरा स्वर्गदूत क्या कर रहा है, यह हम अभी तक नहीं जानते।

हम तीसरे पद पर उस गतिशील सिंहासन के एक और उल्लेख के साथ आते हैं। नहीं, यह गतिशील सिंहासन का उल्लेख नहीं है। हमें बहुत सावधान रहना होगा क्योंकि हमें यह शब्द महिमा मिलता है, और हम स्पष्ट रूप से परमेश्वर की उपस्थिति के बारे में बात कर रहे हैं।

लेकिन यह कौन सी उपस्थिति है? क्या यह मंदिर की उपस्थिति है, या यह चलती हुई उपस्थिति है? और अगर हम ध्यान से देखें, तो यह मंदिर की उपस्थिति है जिसे अब इस्राएल के परमेश्वर की महिमा कहा जाता है जो करूब से ऊपर उठ गई है, वह करूब संरचना जिस पर वह विश्राम करती थी, घर की दहलीज तक। यह परम पवित्र स्थान से बाहर आया, और यह मंदिर के बरामदे तक आया। और वहाँ इस्राएल के परमेश्वर का यह शानदार प्रकटीकरण था।

लेकिन यह अशुभ है। यह हमेशा पवित्रतम स्थान के उस अंधेरे कमरे में रहता है। लेकिन अब यह चमक रहा है, और यह जकेल इसे मंदिर के बरामदे पर देख सकता है।

तो, यह परम पवित्र स्थान से बाहर निकलने का पहला चरण है। इस बीच, हम इस दूसरे दृश्य पर वापस जाते हैं और हमें बताया जाता है कि उस स्वर्गीय लेखक की क्या भूमिका है। प्रभु ने लिनन के कपड़े पहने हुए उस व्यक्ति को बुलाया जिसके पास लिखने की डिब्बी थी, और उसे शहर में जाकर कुछ लोगों के माथे पर अपनी कलम और स्याही से निशान लगाने के लिए कहा गया, और वे बच जाएँगे।

वे बच जाएँगे। सभी को नष्ट नहीं किया जाएगा। और इन बचे हुए लोगों को ऐसे बताया गया है कि वे उन सभी घृणित कामों पर विलाप करते हैं और कराहते हैं जो यहाँ किए जाते हैं।

और इसलिए, आपको उन कुछ लोगों के बीच यह स्पष्ट अंतर मिलता है जिन्हें बख्शा जाना है और संभवतः बाकी जिन्हें नष्ट किया जाना है, जो घृणित कार्य कर रहे हैं। और फिर छह विनाशकारी स्वर्गदूतों को एक आदेश दिया गया है, जिन्हें उनके भयानक कार्य करने के लिए बुलाया गया है। और अध्याय 9 और 8.18 के बीच काफी करीबी संबंध है। मेरी नज़र न तो दया करेगी, न ही दया करेगी।

खैर, यह बात समझ में आ गई है। विध्वंसक का रवैया यही होना चाहिए। और फिर विभिन्न... 8.18 में परमेश्वर के क्रोध का भी उल्लेख है।

और यह पद 8 में उठाया गया है, जब आप यरूशलेम पर अपना क्रोध उंडेलते हैं। और इसलिए, यह परिणाम है। 8.18 एजेंडा निर्धारित करता है और अध्याय 9 उस एजेंडे की पूर्ति है।

और इसलिए, घर को अपवित्र किया जाना है। वहाँ वध होना है, और लाशों को मंदिर क्षेत्र में और मंदिर में ही डाल दिया जाना है, इसे अपवित्र करना है ताकि इसे अब पूजा के लिए इस्तेमाल न किया जा सके। और भगवान, जैसा कि भगवान ऐसा करते हैं, और जैसा कि वे यह आदेश देते हैं, और जैसा कि वे अपना काम करते हैं, जब वे हत्या कर रहे थे और मैं अकेला रह गया था, मैं अपने चेहरे पर गिर गया और चिल्लाया, यहाँ श्लोक 8 में, हमारे भगवान भगवान, क्या आप यरूशलेम पर अपना क्रोध उंडेलते हुए इस्राएल के सभी बचे हुए लोगों को नष्ट कर देंगे? हम अक्सर यहजेकेल को अपनी आवाज़ में नहीं पाते हैं, लेकिन यहाँ हम पाते हैं।

हमने पहले भी ऐसा किया है, और यह दूसरी बार है। लेकिन वह वास्तव में एक भविष्यवक्ता की भूमिका निभा रहा है, वह भूमिका जो शास्त्रीय भविष्यवक्ताओं की होती थी जब तक कि उन्हें ऐसा न करने के लिए कहा न जाए, जैसा कि यिर्मयाह के मामले में हुआ। शास्त्रीय भविष्यवक्ताओं के दो कार्य थे।

एक तो अपने श्रोताओं को परमेश्वर के विनाश के वचन की घोषणा करना था, लेकिन दूसरा एक गुप्त कार्य था, मध्यस्थता का एक छिपा हुआ कार्य। हे परमेश्वर, कृपया उन्हें बचा लो। उनके लिए इसे बहुत बुरा मत बनाओ।

हे भगवान, उन्हें एक और मौका दो। और इसका एक बेहतरीन उदाहरण, बेशक, आमोस की किताब में अध्याय 7, श्लोक 2 और 5 में है। और वहाँ एक ऐसा दृश्य है जो आमोस को भूमि और लोगों के विनाश का लगता है। और आमोस ने कहा, हे भगवान भगवान, क्षमा करें, मैं आपसे विनती करता हूँ।

याकूब कैसे खड़ा रह सकता है? वह बहुत छोटा है। और प्रभु ने नरमी दिखाई। मैं उन्हें एक और मौका दूंगा। और फिर श्लोक 5 में, विनाश का एक और दर्शन है, जो होने की संभावना है।

और आमोस फिर से मध्यस्थता करता है और वही बात फिर से कहता है। और प्रभु ने उस मध्यस्थता, उस भविष्यवाणीपूर्ण प्रार्थना, प्रार्थना की शक्ति को स्वीकार किया। और परमेश्वर कहता है, ठीक है, मैं उन्हें एक और मौका दूंगा।

ऐसा नहीं होगा। और इसलिए, हम आगे बढ़ते हैं, लेकिन हम अध्याय 8 और श्लोक 2 पर आते हैं, जहाँ प्रभु कहते हैं, " मेरे लोगों इस्राएल का अंत आ गया है। मैं उन्हें फिर कभी नहीं छोड़ूंगा।"

मैं अब और नरमी नहीं बरतने वाला। उन्हें अपने मौके मिल चुके हैं। उन्होंने पश्चाताप करने के अपने अवसरों का उपयोग किया है और उन्होंने ऐसा नहीं किया है।

और इसलिए यह बात सच है। और इसलिए यह जेकेल इस मध्यस्थता मंत्रालय में शामिल है। और हम बाद में यह जेकेल द्वारा ऐसा करने का एक और उदाहरण देखेंगे।

लेकिन श्लोक 9 में यह स्पष्टीकरण है कि सज़ा क्यों होनी चाहिए। अपराध बहुत बड़ा है। देश खून-खराबे से भरा हुआ है।

शहर में बहुत सारी विकृतियाँ हैं। इसलिए, यहाँ न केवल धार्मिक पाप थे, बल्कि नैतिक और सामाजिक पाप भी थे जो लोग करते थे। और लोगों के पास औचित्य था।

उन्होंने कहा, "प्रभु ने इस देश को त्याग दिया है और प्रभु नहीं देखता। प्रभु ने हमें छोड़ दिया है। उसने हमें त्याग दिया है।"

उसने हमें दुश्मन के हवाले कर दिया है और वह चला गया है। खैर, यह बिलकुल सही नहीं था, लेकिन एक तरह से यह सही था, क्योंकि यह लगभग एक भविष्यवाणी थी कि क्या होने वाला है। लेकिन उनके पास यह दृष्टिकोण था कि उनके दृश्य से ईश्वर गायब हो गया है।

इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि हम क्या करते हैं। वह हमें नहीं देखता। वह अब हमें सज़ा नहीं देगा।

वह इसे नहीं देख सकता। इसलिए, यह ठीक है। और इसलिए, मेरी नज़र न तो दया करेगी, न ही दया करेगी।

और यह 8.18 की एक और प्रतिध्वनि है। और इस तरह, एजेंडा चरण दर चरण पूरा हो रहा है। और फिर श्लोक 11 में, आदमी वापस रिपोर्ट करता है और कहता है, मैंने अपना काम कर दिया है। मैंने उन लोगों के सिर पर अपना निशान लगा दिया है जिन्हें बख़्शा जाना है।

मैंने वैसा ही किया जैसा आपने मुझे आदेश दिया था। और आज्ञाकारी शास्त्री और परमेश्वर के अवज्ञाकारी लोगों के बीच यह अंतर है जिसके बारे में हम अभी सुन रहे हैं। लेकिन यह वास्तव में एक प्रस्तावना है।

यह अंतिम पद वास्तव में अध्याय 10 की प्रस्तावना है, क्योंकि लेखक कुछ और करने जा रहा है। मेरे पास तुम्हारे लिए करने के लिए कुछ और है, भगवान वस्तुतः कहते हैं। लेकिन पहले, अध्याय 10 में, हम पद 1 पर आते हैं। मैंने देखा, और करूबों के सिर के ऊपर गुंबद के ऊपर, वह

आकाश, वह मंच एक सिंहासन मंच के रूप में नीचे आ गया, और उनके ऊपर कुछ दिखाई दिया, कुछ नीलम जैसा आकार जो सिंहासन जैसा दिखता था।

और यह याद दिलाता है कि वहाँ परमेश्वर की दूसरी उपस्थिति थी, न केवल मंदिर की उपस्थिति जो अब मंदिर के बरामदे पर दिखाई दे रही है, जो परम पवित्र स्थान से निकलकर, बल्कि प्रांगण में, प्रांगण में, भीतरी प्रांगण में, एक ईश्वरीय दर्शन में परमेश्वर की दूसरी उपस्थिति के साथ एक चल सिंहासन था। लेकिन यह एक अनुस्मारक है, एक छोटा सा अनुस्मारक कि पाठ कहाँ आगे बढ़ने वाला है क्योंकि ये दो उपस्थितियाँ मिलकर एक हो जाएँगी, केवल चल सिंहासन पर, अंततः। लेकिन हम उस नए कार्य पर वापस आते हैं जो लेखक के पास है, लेकिन पद 2 में, अब तक, जब उसका उल्लेख किया गया है, तो उसके पास अपनी कलम और स्याही के साथ उसका लेखन केस था, लेकिन अब उसके पास वह नहीं है।

उसने लिनेन पहने हुए आदमी से कहा, और इसलिए वह कोई मुंशी नहीं है। उसे दूसरा काम करना है। मैं तुमसे कुछ ऐसा करवाना चाहता हूँ जो मुंशी जैसा बिलकुल नहीं है। इसके लिए तुम्हें अपनी कलम की ज़रूरत नहीं है।

करूबों के नीचे चक्की के भीतर जाओ। करूबों के बीच से जलते हुए अंगारों से अपनी मुट्ठी भर लो और उन्हें शहर में बिखेर दो। क्या आपको अध्याय 1 में याद है जब हमें मंच के नीचे और उन जीवित प्राणियों के बीच वह दर्शन हुआ था? इस न्याय के ईश्वरीय दर्शन में आग, आग, न्याय की आग थी।

और यह है, हमें फिर से इसकी याद दिलाई गई है, यह फिर से आता है। यह करूब के नीचे चक्की के भीतर है। अपने हाथों को जलते हुए अंगारों से भर लें क्योंकि वह एक अलौकिक प्राणी है ; वह अपने हाथों को जलाए बिना और उन्हें शहर में बिखेरे बिना ऐसा कर सकता है।

और इसलिए न्याय की वह आग वास्तव में शहर पर गिराई जाने वाली है। हम देखते हैं कि अध्याय 1 के जीवित प्राणियों को अब करूब कहा जाता है। अध्याय 10 में, हम उनके लिए यह नया शब्द पाएँगे।

वे जीवित प्राणी नहीं हैं जो मानव जैसे हैं; वे करूब हैं जिनके पास मानवीय चेहरों के साथ पशु शरीर हैं। लेकिन शीर्षक में यह परिवर्तन क्यों किया गया? यह उन करूबों, उन मूर्तियों, परम पवित्र स्थान में उन छवियों और परम पवित्र स्थान में परमेश्वर के अदृश्य सिंहासन को सहारा देने वाली उन स्वर्ण छवियों से जुड़ता है। लेकिन अब, परमेश्वर की उपस्थिति अंततः करूबों के एक समूह से दूसरे करूबों के समूह में स्थानांतरित होने वाली है।

और इसलिए, यह लिंक है, भगवान के दरबारियों की ये मूर्तियाँ। उनका वर्णन किया गया है, उनका शीर्षक अब मोबाइल सिंहासन के नीचे इन जीवित प्राणियों को दिया गया है। पद 3 में, करूब घर के दक्षिण की ओर खड़े हैं।

वे सभी घृणित कार्य जो भाग ले रहे थे, वे सभी उत्तर की ओर थे, उत्तरी द्वार से अंदर आ रहे थे और दूसरे उत्तरी द्वार से होकर जा रहे थे और फिर मंदिर के उत्तरी द्वार से होकर जा रहे थे और

इसी तरह आगे भी। और यहीं पर वे घृणित कार्य हो रहे थे। लेकिन यह मोबाइल सिंहासन मंदिर के दक्षिण की ओर, दूसरी ओर, उन घृणित कार्यों से मंदिर क्षेत्र के भीतर जहाँ तक संभव था, दूर स्थित था।

और इस समय, एक बादल ने भीतरी प्रांगण को भर दिया। मैं आपको उस आग के बारे में भजन 18 का हवाला देने जा रहा था, जहाँ हमारे पास एक ईश्वरीय दर्शन है। भजन 18, श्लोक 8 में, जब परमेश्वर नीचे आया, तो उसके नथुनों से धुआँ निकला, उसके मुँह से आग भस्म हो गई, उसके मुँह से जलते हुए अंगारे निकले।

और यह न्याय की आग थी जिसे परमेश्वर राजा के शत्रुओं के विरुद्ध इस्तेमाल करने जा रहा था। और परमेश्वर वहाँ एक करूब पर सवार है। तो, स्वर्ग से पृथ्वी पर आने वाले परमेश्वर की गतिशीलता, भजन 18 में, श्लोक 10 में, पहले से ही एक करूब पर सवार है।

और इसलिए, इस तरह के एक अंश की याद ताजा हो जाती है। लेकिन मैं आपको जो बताना चाहता हूँ वह महिमा का यह रूप है; प्रभु की महिमा करूब, करूब संरचना से घर की दहलीज तक उठी। और हम वापस उसी पर आ गए हैं जो हमें 9:3 में बताया गया था, कि मंदिर में परमेश्वर की यह महिमा है, जो करूब संरचना से घर की दहलीज तक बढ़ रही है।

और मंदिर स्वयं बादल से भर गया, और प्रांगण प्रभु की महिमा की चमक से भर गया। और यह हमें सुलैमान के मंदिर के समर्पण की याद दिलाता है। सुलैमान का मंदिर बनाया गया था, और यह एक खाली खोल था, लेकिन फिर भगवान अंदर आए, और उन्होंने खुद को प्रकट किया, न केवल परम पवित्र के अंधेरे में उस उपस्थिति से बल्कि ईश्वरीय दर्शन की एक शानदार अभिव्यक्ति के साथ।

और बादल ने मंदिर को भर दिया। और हमें 1 राजा 8, आयत 10 से 11 में बताया गया है। बादल ने प्रभु के भवन को इतना भर दिया कि याजक बादल के कारण सेवा करने के लिए खड़ा नहीं हो सका।

क्योंकि यहोवा की महिमा ने यहोवा के भवन को भर दिया। और यहाँ यह दुखद विडंबना है। सुलैमान के मंदिर के उपयोग की शुरुआत में जो महिमा दिखाई दी थी, वह अब अंत में फिर से प्रकट होती है, जब वह मंदिर छोड़ने जा रही होती है।

और इसलिए, आराधना की शुरुआत की एक भयानक याद, और अब आराधना का अंत होना है। और इसी तरह का एक उज्वल ईश्वरीय दर्शन, इस मंदिर की उपस्थिति की दृश्यता, जो अन्यथा परम पवित्र स्थान में अदृश्य होती। लेकिन छंद 6 में, आदमी को अपना काम करने की याद दिलाई जाती है, और यह वर्णित किया गया है कि उसने यह कैसे किया।

पद 8 से आगे, या पद 9 से, हमारे पास एक लंबा अंश है जहाँ हमें करूबों और पहियों का वर्णन मिलता है। लेकिन फिर 15 में, हम एक बार फिर वर्णन पर वापस आते हैं। और करूब, अब यह मोबाइल सिंहासन के करूब हैं।

वे प्रस्थान करने की तैयारी करते हैं। परमेश्वर ने उस परम पवित्र मंदिर की उपस्थिति को उस गतिशील सिंहासन की उपस्थिति के साथ मिला दिया है। और गतिशील सिंहासन ऊपर की ओर बढ़ने वाला है, आगे और ऊपर की ओर बढ़ने वाला है।

करूब ऊपर उठे, और अध्याय 1 के जीवित प्राणियों के साथ उनकी पहचान हुई। यह फिर से वही दृश्य है। पद 15 में, ये वे जीवित प्राणी थे जिन्हें मैंने किबार नदी के किनारे देखा था। और जब करूब चलते थे, तो पहिये उनके साथ चलते थे।

और करूबों ने धरती से ऊपर उठने के लिए अपने पंख ऊपर उठाए। और इस तरह, हम देखते हैं कि पहिए कुछ समय के लिए ज़मीन पर चलते हैं, और फिर पंख फड़फड़ाते हैं, और रथ का सिंहासन ऊपर चला जाता है। और जीवित प्राणियों की आत्मा उनमें थी, जिससे पहिए और जीवित प्राणी गतिशील हो गए।

और क्या हो रहा है, हमें श्लोक 18 में बताया गया है, प्रभु की महिमा घर की दहलीज से बाहर निकलकर करूबों के ऊपर रुक गई। यह वास्तविक गतिविधि है। उपस्थिति, मंदिर की उपस्थिति, श्लोक 18 में ईश्वरीय उपस्थिति के साथ विलीन हो जाती है।

और फिर वे चले जाते हैं, वे चले जाते हैं। और यह ऊपर जाता है। और यह सबसे पहले ज़मीन के साथ-साथ चलता है।

और यह मंदिर के भीतरी प्रांगण के द्वार तक जा रहा है, जो उस स्थान से लगभग 50 गज की दूरी पर था जहाँ पहले मोबाइल सिंहासन था। और इसी तरह, वे आगे बढ़ते हैं। यह पूर्व की ओर जा रहा है।

श्लोक 20 में, एक बार फिर, जीवित प्राणियों और चार चेहरों के साथ एक पहचान है, और वे आगे बढ़ रहे हैं। और इसलिए, मंदिर की उपस्थिति मोबाइल सिंहासन की उपस्थिति के साथ विलीन हो जाती है, और यह मंदिर में नहीं रह जाती। अब, यह कथा 11:22 में जारी है।

करूबों ने अपने पंख ऊपर उठाए, और पहिये उनके साथ थे, और इस्राएल के परमेश्वर का तेज उनके ऊपर था। और यहोवा का तेज नगर के बीच से ऊपर चढ़ा और नगर के पूर्व में पहाड़ पर रुक गया। और यहजेकेल ने यह आखिरी बार देखा।

यह उसका आखिरी दृश्य है। वहाँ वह पूर्वी क्षितिज के सामने मोबाइल सिंहासन को देखता है, जो जैतून का विशाल पर्वत है, और इसका मोबाइल सिंहासन स्वर्ग की ओर वापस जा रहा है। यह निश्चित रूप से भगवान की उपस्थिति है जो अब मंदिर में नहीं है।

और इस तरह इस दर्शन का अंत हो गया। लेकिन, इस बीच, हम मंदिर क्षेत्र में चल रही पूजा की कहानी पर लौटते हैं। सिवाय इस मामले में, यह पूजा नहीं है, बल्कि मंदिर क्षेत्र में अनैतिक गतिविधि है।

और यह उन चार दृश्यों की निरंतरता है जो हमने पहले देखे थे। वहाँ 25 आदमी थे, और यहजेकेल ने उनमें से दो को पहचान लिया। याजन्याह था, जो कि दूसरा याजन्याह था, क्योंकि उसका पिता अलग था, और पेल्लेतियाह, लोगों के अधिकारी।

और वे यरूशलेम के बुजुर्ग प्रतीत होते हैं। और यहजेकेल को अपने निर्वासन से पहले के दिनों से उनमें से दो याद हैं। और वे क्या कर रहे थे? खैर, भगवान कहते हैं, नश्वर, ये वे लोग हैं जो अधर्म की योजना बनाते हैं और इस शहर में दुष्ट सलाह देते हैं।

वे नगर परिषद के सदस्य हैं, और वे कुछ भी अच्छा नहीं कर रहे हैं। और वे क्या कर रहे हैं? वे कहते हैं कि अभी समय नहीं आया है, और वे घर बनाने के करीब नहीं हैं। यह शहर बर्तन है, और हम मांस हैं।

और ऐसा लगता है कि कानून की आड़ में शहर में संपत्ति जब्त की जा रही थी। घरों को उनके मालिकों से छीना जा रहा था। और शहर के अधिकारी उन पर कब्ज़ा कर रहे थे।

और मालिकों को मारा जा रहा था। और यह हमें उत्तरी इस्राएल के एक दृश्य की याद दिलाता है, अहाब के समय में, जहाँ अहाब नाबोत के अंगूर के बाग को अपने बगल में चाहता था। और इज़ेबेल ने कहा कि मैं तुम्हारे लिए इसका प्रबंध कर सकती हूँ, मेरी प्यारी।

और उसने उस पर राजद्रोह का आरोप लगाया। और इसलिए अंगूर का बाग राजसी संपत्ति बन गया, और राजा अहाब ने इसे अपने कब्ज़े में ले लिया। और इसलिए, यहाँ भी गलत कानून का इस्तेमाल किया गया है।

और यह एक भयानक बात है। और वे इस रूपक का उपयोग करते हैं, यह शहर बर्तन है और हम मांस हैं। यहाँ केवल हमारे लिए जगह है।

उन मकान मालिकों के लिए कोई जगह नहीं है। हम उन्हें मरवा देंगे। हम ही वो लोग हैं जो उनके घरों पर कब्ज़ा करते हैं।

और इसलिए हमें अपने घर बनाने की ज़रूरत नहीं है। हम बस दूसरों के घरों पर कब्ज़ा कर सकते हैं। और नगर परिषद में इतनी भयानक चीजें हो रही हैं।

और यह बात सच है। और यह मंदिर की संपत्ति पर हो रहा है, इस परिषद की बैठक में। और इसलिए भगवान की ओर से यह आरोप है, श्लोक 5 और श्लोक 6 और इसी तरह आगे भी।

तुमने इस शहर में बहुतों को मारा और उनकी संपत्ति हड़पने के लिए इसकी सड़कों को मृतकों से भर दिया। और इसलिए यह श्लोक 7 में उस रूपक को उठाता है। जिन मृतकों को तुमने शहर के भीतर रखा है वे मांस हैं। और यह शहर बर्तन है।

लेकिन तुम्हें इससे बाहर निकाल दिया जाएगा। और इस रूपक का दोबारा इस्तेमाल करने का मतलब है कि ये सलाहकार शहर के नहीं हैं। यह वास्तव में उन अच्छे नागरिकों का था जिनकी संपत्ति छीन ली गई थी।

वे खाना पकाने के बर्तन में मांस थे। लेकिन सलाहकारों के पास खाना पकाने के बर्तन में कोई जगह नहीं थी। उन्हें बाहर निकालकर विदेशियों के हाथों में सौंप दिया जाना था, श्लोक 9, जो तुम पर न्याय करेंगे।

तुम तलवार से मारे जाओगे। और ऐसा लगता है, यह दर्शन अन्य दर्शनों से काफी अलग है। अन्य दर्शन लाइव दृश्य नहीं थे, वे एक तरह के वीडियो दृश्य थे जो यहजेकेल देख रहा था।

लेकिन इस मामले में, यह एक जीवंत दृश्य है। और वह कुछ ऐसा देख रहा है जो वास्तव में उस समय हो रहा है। और वहाँ वह परमेश्वर की ओर से इस न्याय की भविष्यवाणी कर रहा है।

और पद 13 में, जब मैं भविष्यवाणी कर रहा था, तो बनायाह का पुत्र पलीतिया मर गया। वह ऐसे ही गिरकर मर गया।

और इसे विदेशी अधिकारियों को नहीं सौंपा गया और न ही उनके द्वारा मारा गया। वह बस मौके पर ही मर गया। उस समय, यहजेकेल मध्यस्थता के लिए एक और निवेदन करता है।

मध्यस्थता का भविष्यवाणी कार्य वह अपना बना लेता है। मैं अपने चेहरे के बल गिर पड़ा और ऊँची आवाज़ में चिल्लाया और कहा, हे प्रभु परमेश्वर, क्या आप इस्राएल के बचे हुए लोगों का पूरी तरह से अंत कर देंगे? यह परमेश्वर के लोगों के पूर्ण अंत की शुरुआत है। और वह बहुत चिंतित है।

अंत में, हम पद 14 से 21 में एक नए संदेश पर आते हैं। जैसा कि मैंने कहा, 22 से 24 तक वे दर्शन, दर्शनों की वह श्रृंखला समाप्त हो जाएगी। लेकिन इस बीच, पद 14 से आगे हमें परमेश्वर की ओर से एक और संदेश मिलता है।

और हमें इस संदेश के बारे में सावधानी से सोचना होगा। क्या आपको याद है, हमने देखा है कि न्याय के संदेशों के बीच में, 587 से आगे की अवधि की प्रतीक्षा है जिस पर यहजेकेल पुस्तक के दूसरे भाग में प्रमुखता से चर्चा करेगा? और ऐसा लगता है कि श्लोक 14 से 21 संदेशों की इस श्रृंखला से संबंधित हैं जो 587 से पहले की अवधि से संबंधित नहीं हैं बल्कि 587 के बाद की अवधि से संबंधित हैं।

और श्लोक 15 में, परमेश्वर ने यहजेकेल को एक समस्या का ज़िक्र किया। और यह निर्वासन के बाद की स्थितियों के बारे में बात कर रहा है, हाँ, जो लोग अब तक निर्वासन में हैं, यह 587 के बाद है। और इसलिए, यह सामान्य निर्वासन हुआ है।

लेकिन ऐसे लोग भी थे जो 587 के बाद भी यहूदा में रह रहे थे। और दिलचस्प बात यह है कि विलाप की किताब में उनका ज़िक्र है। यह उन लोगों के बारे में है जो उस देश में ही रह गए।

लेकिन यहाँ, उन लोगों का बहुत नकारात्मक मूल्यांकन किया गया है। वे चले गए हैं, और यरूशलेम के निवासियों ने कहा है कि वे प्रभु से बहुत दूर चले गए हैं। हमें यह भूमि कब्जे के लिए दी गई है।

वे दुष्ट हैं, निर्वासित हैं, और वे दुष्ट लोग हैं। भगवान ने उन्हें दूर कर दिया है। और हम बचे हैं।

हम अच्छे लोग हैं। हम अच्छे लोग हैं। और इसलिए, हमारे पास अभी भी भगवान की ओर से ज़मीन है।

लेकिन वे प्रभु से बहुत दूर चले गए। और इसलिए, वे निर्वासन में बहुत दूर चले गए। और हम बाद में पाएंगे कि यह दृष्टिकोण है, कि इन दो समूहों के बीच यह शत्रुतापूर्ण रवैया है।

और जो लोग देश में बचे हैं, वे अपने पापों के कारण निर्वासित होने के लिए दूसरों को दोषी ठहराते हैं। लेकिन वे खुद को उस सज़ा से मुक्त कर लेते हैं। और इसलिए अब निर्वासितों को यहजेकेल के ज़रिए प्रोत्साहन का संदेश मिलता है।

इसलिए, कहो, और उन 587 निर्वासितों से कहो जिन्होंने 597 निर्वासितों को बढ़ाया है। इसलिए कहो, भले ही मैं उन्हें राष्ट्रों के बीच दूर कर दूँ। 587 निर्वासन अब अतीत में है।

और यद्यपि मैंने उन्हें विभिन्न देशों में फैला दिया है। फिर भी मैं थोड़े समय के लिए उनके लिए शरणस्थली रहा हूँ। या कुछ हद तक उन देशों में जहाँ वे गए हैं।

निर्वासितों के लिए परमेश्वर की उपस्थिति अभी भी एक वास्तविकता है। और यह एक अभयारण्य की तरह है, जैसे परमेश्वर उस मंदिर में मौजूद हुआ करता था।

भगवान निर्वासितों के लिए एक तरह का मंदिर है। और उनकी मौजूदगी अभी भी उनके बीच है। याद रखें, यह मौजूदगी अलग-अलग रूप ले सकती है।

और परमेश्वर यहोशू से कह सकता था, मैं तुम्हारे साथ रहूँगा, तुम्हारे काम में तुम्हारी मदद करूँगा। और इसलिए परमेश्वर उन निर्वासितों के साथ है। उनकी उपस्थिति एक तरह के अभयारण्य के रूप में उनके साथ है।

और हम नहीं जानते कि इसका अनुवाद कैसे किया जाए। थोड़े समय के लिए, नया RSV टेक्स्ट या कुछ हद तक मार्जिन। क्या यह उपस्थिति का एक छोटा लेकिन वास्तविक तत्व है? या यह एक अस्थायी उपस्थिति है इससे पहले कि भूमि पर फिर से पूरी उपस्थिति हो? हम पूरी तरह से निश्चित नहीं हैं।

लेकिन वैसे भी, परमेश्वर की उपस्थिति की पुष्टि निर्वासितों के साथ है। और यह, ज़ाहिर है, यहजेकेल की 587 के बाद की सेवकाई की एक बहुत बड़ी विशेषता है। और उद्धार के बारे में उनकी भविष्यवाणियाँ।

और इसलिए एक वादा आता है कि निर्वासन से वापसी होगी। श्लोक 17 में, मैं तुम्हें लोगों से इकट्ठा करूँगा, और मैं तुम्हें इस्राएल की भूमि दूँगा। और जब वे वहाँ आएँगे, तो वे वहाँ से सभी घृणित चीजें और सभी धिनौने काम निकाल देंगे।

मैं उन्हें एक दिल या शायद एक नया दिल दूँगा। दो रीडिंग हैं। और उनके भीतर एक नई आत्मा डालूँगा।

मैं उनके शरीर से पत्थर का हृदय निकालकर उन्हें मांस का हृदय दूँगा कि वे मेरी विधियों पर चलें। यह अपने उचित स्थान पर फिर से आएगा।

अध्याय 36 और श्लोक 26 और 27 में। मैं तुम्हें एक नया हृदय दूँगा। मैं तुम्हारे भीतर एक नई आत्मा डालूँगा।

मैं तुम्हारे शरीर से पत्थर का हृदय निकालकर तुम्हें मांस का हृदय दूँगा। मैं अपनी आत्मा तुम्हारे भीतर डालूँगा और तुमको मेरी विधियों का पालन करने और मेरे नियमों को मानने में सावधान रहने के लिए प्रेरित करूँगा। यह भविष्य के लिए वादा है।

और यहाँ इसे वापस रखा गया है। जैसे कि 33 में यहजेकेल के लिए पहरेदार का रूपक अध्याय 3 में भी वापस रखा गया था। इसलिए, 587 निर्वासितों को 36 का वादा भी अध्याय 11 में वापस रखा गया है। और इसलिए यहाँ यह प्रत्याशा है।

यह संदेश सीधे निर्वासितों के पूरे समूह के लिए है। लेकिन इसमें एक चेतावनी भी है। इसमें एक डंक छिपा है।

क्या आपने आयत 21 पर गौर किया है? लेकिन जो लोग अपनी धिनौनी चीजों और धिनौने कामों की ओर आकर्षित होते हैं, वे निर्वासित हैं। वे अभी भी देश में हैं।

जब वे अभी भी निर्वासन में हैं और जब वे वापस देश लौटेंगे। मैं उनके कर्मों का दण्ड उन्हीं के सिर पर डालूँगा, प्रभु परमेश्वर कहते हैं। याद रखें कि हम दो प्रकार के न्याय के बारे में बात कर रहे हैं।

बड़े अक्षर जे के साथ निर्णय। वह कट्टरपंथी निर्णय जो 587 में यरूशलेम के पतन से जुड़ा था। और फिर छोटे अक्षर जे के साथ निर्णय। कम पैमाने पर लेकिन बहुत वास्तविक। खैर, यहाँ वह छोटा सा निर्णय है।

और यहजेकेल ने आम तौर पर अपने आश्वासन के साथ चुनौती को भी मिलाया। जब उसने उन्हें वादे दिए तो उसने अक्सर कहा कि उनके साथ कुछ शर्तें भी हैं। यहजेकेल की सेवकाई की एक बहुत बड़ी विशेषता है जैसा कि हम पहले ही देख चुके हैं।

तो, अच्छी चीजें आने वाली हैं, लेकिन सावधान रहें। इन वादों को पूरा करने की जिम्मेदारी आप पर है। उनके आने से पहले और आने पर।

और फिर अंततः हम उन दर्शनों के मूल दृश्य पर वापस जाते हैं। जो यहजेकेल ने अपनी समाधि में देखे थे। और वह जैतून के पहाड़ पर चल सिंहासन का अपना अंतिम दर्शन करता है।

यरूशलेम के ऊपर बहुत ऊपर। और फिर वह पद 24 के अंत में कहता है। तब जो दर्शन मैंने देखा था वह मुझसे दूर हो गया, और मैंने निर्वासितों को वे सारी बातें बताईं जो प्रभु ने मुझे दिखाई थीं।

वह अपनी तंद्रा से बाहर आता है। और वहाँ बुजुर्ग अभी भी उसके पास बैठे हैं। बुजुर्गों को लग सकता है कि यह कुछ सेकंड का समय रहा होगा।

यह सच में सपने हैं, है न? आप बहुत सारे अनुभवों से गुजर सकते हैं। और आप जागते हैं और घड़ी देखते हैं, और आप बस कुछ ही मिनटों के लिए झपकी ले रहे होते हैं। और इसलिए मुझे आपको उन सभी दृश्यों के बारे में बताना है जो मुझे आए हैं।

और इसलिए, वह उन्हें बताता है। लेकिन यह वह ट्रान्स अनुभव है जिससे यहजेकेल गुजर रहा है। लेकिन वह मुख्य दर्शन एक ग्राफिक नाटकीय चित्रण था।

यरूशलेम को असुरक्षित छोड़ दिया गया है। ईश्वर चला गया है। सिख्योन धर्मशास्त्र की पुरानी बातें।

परमेश्वर नगर के बीच में है, और वह कभी नहीं टलेगा। परमेश्वर उसका शरणस्थान और बल है। ऐसा पहले भी हुआ करता था।

लेकिन अब ऐसा नहीं है। इसलिए, इसे विनाश का सामना करना पड़ेगा। इस्राएल के परमेश्वर ने मंदिर छोड़ दिया है।

और अब वहाँ उसकी पारंपरिक उपस्थिति सच्ची नहीं रही। और उसने इसे इस्राएल के शत्रुओं को सौंप दिया। ताकि वे उनके दुष्ट तरीकों की सज़ा के लिए उसके प्रतिनिधि बन सकें।

धार्मिक घृणा और सामाजिक और नैतिक घृणा। ईश्वर के लिए कोई जगह नहीं बची। और अंततः, यरूशलेम में ईश्वर के लोगों के लिए कोई जगह नहीं बची।

अगली बार हमें अध्याय 12 से अध्ययन करना चाहिए। 12:1 से 14:11 तक। श्लोक 1 से अध्याय 11, श्लोक 25 तक।

यह डॉ. लेस्ली एलन द्वारा यहजेकेल की पुस्तक पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 5 है, अपवित्र मंदिर से निकलते हुए परमेश्वर की महिमा का दर्शन, अंततः आशा। यहजेकेल 8:1-11:25.

